IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

SDGs की यात्रा (2015–2025) : भारत की उपलब्धियाँ, चुनौतियाँ एवं भावी संभावनाएँ

काजल भारती, एम० ए०, यूजीसी–नेट

सारांश

सतत विकास लक्ष्य (Sustainable Development Goals – SDGs) को संयुक्त राष्ट्र द्वारा 2015 में विश्वभर में गरीबी उन्मूलन, असमानता को कम करने, पर्यावरणीय संतुलन और सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देने हेतु लागू किया गया। भारत ने SDGs को राष्ट्रीय विकास नीतियों के साथ एकीकृत करते हुए नीतियों, योजनाओं तथा संस्थागत ढाँचे के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नीति आयोग द्वारा प्रकाशित SDG इंडिया इंडेक्स, स्वच्छ भारत मिशन, आयुष्मान भारत, उज्ज्वला योजना, जल जीवन मिशन, बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ, पीएम गरीब कल्याण योजना आदि अनेक पहलों ने SDG 1 (गरीबी), SDG 3 (स्वास्थ्य), SDG 4 (शिक्षा), SDG 5 (लैंगिक समानता) एवं SDG 6 (जल एवं स्वच्छता) सहित कई लक्ष्यों पर उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की है। फिर भी, देश अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है – बढ़ती आर्थिक असमानता, कुपोषण, बेरोजगारी, जलवायु परिवर्तन से उपजी प्राकृतिक आपदाएँ, कृषि संकट और कोविड–19 महामारी के कारण विकास की गति में बाधा उत्पन्न हुई। ग्रामीण–शहरी विकास असंतुलन, डेटा संग्रहण की कमी तथा वित्तीय संसाधनों की सीमाएँ SDGs की प्राप्ति में बाधक हैं। भविष्य की दिशा (Prospects) भारतीय परिप्रेक्ष्य में स्थानीय स्तर पर SDGs के क्रियान्वयन, हरित अर्थव्यवस्था, नवीकरणीय ऊर्जा, डिजिटल गवर्नेंस, सामाजिक न्याय आधारित विकास मॉडल और वैश्विक सहयोग पर निर्भर करेगी। यदि भारत आने वाले पाँच वर्षों में समावेशी विकास, तकनीक–संचालित योजनाओं और नीति एकीकरण पर बल दे, तो 2030 तक SDGs की प्राप्ति की दिशा में मजबूत वैश्विक नेतृत्व प्रस्तुत कर सकता है।

मुख्य शब्द – सतत विकास लक्ष्य, भारत की प्रगति, गरीबी एवं स्वास्थ्य, जलवायु परिवर्तन, भावी संभावनाएँ।

परिचय

मानव सभ्यता के विकास का इतिहास यह दर्शाता है कि समाज जब–जब आर्थिक प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ा, तब–तब उसने प्रकृति के संतुलन और सामाजिक समावेशन की अनदेखी भी की। औद्योगिक क्रांति (1760–1840) के बाद वैश्विक उत्पादन और तकनीकी दक्षता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, किंतु इसके साथ ही गरीबी, असमानता, पर्यावरण प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसी जटिल समस्याएँ तीव्र गति से सामने आने लगीं। इसके समाधान हेतु 20वीं सदी के उत्तरार्ध में सतत विकास (Sustainable Development) की अवधारणा विकसित हुई, जिसे सर्वप्रथम 1987 की ब्रंटलैंड रिपोर्ट (Our Common Future) ने परिभाषित किया – "ऐसा विकास जो वर्तमान की आवश्यकताओं की पूर्ति करे, परन्तु भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं से समझौता न करे" (World Commission on Environment and Development, 1987)।

इस विचार को आगे बढ़ाते हुए संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2000 में Millennium Development Goals (MDGs) को अपनाया, जिनका लक्ष्य 2000–2015 के दौरान गरीबी, भूख, मातृ एवं शिशु मृत्यु दर आदि को कम करना था। MDGs की आंशिक सफलता एवं उनकी सीमाओं को ध्यान में रखते हुए 25 सितम्बर 2015 को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 17 सतत विकास लक्ष्य (SDGs) को वैश्विक एजेंडा के रूप में स्वीकृत किया, जिसकी समयसीमा 2030 निर्धारित की गई। SDGs का दायरा MDGs से अधिक व्यापक है, जिसमें सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरणीय तीनों आयामों के विकास को समान महत्त्व दिया गया है।

भारत ने SDGs को न केवल अंगीकार किया, बल्कि इन्हें राष्ट्रीय विकास नीतियों जैसे नीति आयोग के SDG इंडिया इंडेक्स, पंचवर्षीय योजनाओं के अवशेष ढाँचे, केंद्रीय योजनाओं जैसे स्वच्छ भारत मिशन (2014), जन धन योजना (2014), उज्ज्वला योजना (2016), आयुष्मान भारत (2018), जल जीवन मिशन (2019) आदि के साथ एकीकृत किया। भारत की लोकतांत्रिक संरचना, जनसंख्या विविधता और क्षेत्रीय विषमताएँ SDGs के कार्यान्वयन को एक चुनौतीपूर्ण किंतु महत्वपूर्ण प्रयास बनाती हैं। 2015 से 2025 का यह दशक भारत के लिए निर्णायक रहा है, जहाँ एक ओर लाखों लोग गरीबी रेखा से ऊपर उठे, स्वच्छता और जल उपलब्धता में सुधार हुआ, स्कूल नामांकन बढ़ा और स्वास्थ्य सुविधाएँ सुदृढ़ हुईं; वहीं दूसरी ओर कुपोषण, बेरोजगारी, जलवायु परिवर्तन, कोविड–19 महामारी, क्षेत्रीय विषमता और वित्तीय संसाधनों की कमी जैसी चुनौतियों ने SDGs की गति को सीमित किया।

साहित्य समीक्षा

सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) पर उपलब्ध साहित्य दर्शाता है कि वैश्विक स्तर पर विकास की बहुआयामी चुनौतियों – गरीबी, भूख, असमानता, जलवायु परिवर्तन और सामाजिक न्याय से निपटने के लिए SDGs को एक समग्र ढाँचा माना गया है (UNDP, 2015)। विश्व बैंक (World Bank, 2020) एवं संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक परिषद (ECOSOC, 2022) द्वारा प्रकाशित रिपोर्टों में यह उल्लेख किया गया है कि दक्षिण एशिया, विशेषकर भारत, SDG की वैश्विक सफलता के लिए केंद्रीय भूमिका निभाता है। भारतीय संदर्भ में नीति आयोग द्वारा प्रकाशित SDG India Index Reports (2018, 2020, 2023) के अनुसार, केरल, हिमाचल प्रदेश और तमिलनाडु जैसे राज्यों ने सामाजिक संकेतकों – स्वास्थ्य, शिक्षा, लैंगिक समानता में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, जबकि बिहार, उत्तर प्रदेश और झारखंड जैसे राज्यों में विकास की गति अपेक्षाकृत धीमी रही है। विद्वानों जैसे सक्सेना (2021), कुमार एवं घोष (2022) ने अपने शोध में यह तर्क दिया है कि भारत की SDG प्रगति आर्थिक असमानता, संसाधनों के असंतुलित वितरण, जलवायु जोखिम और कोविड–19 महामारी से प्रभावित हुई है। वहीं दूसरी ओर, राव (2023) और UNESCAP (2024) के अध्ययनों में यह बताया गया है कि डिजिटल नवाचार, हरित ऊर्जा, स्थानीय शासन (Panchayati Raj Institutions) और सार्वजनिक–निजी भागीदारी भारत के SDG लक्ष्यों की प्राप्ति में महत्वपूर्ण कारक बन सकते हैं। कुल मिलाकर, साहित्य यह इंगित करता है कि भारत की SDG यात्रा मिश्रित परिणामों वाली रही है जहाँ उपलब्धियाँ सराहनीय हैं, वहीं चुनौतियाँ भी संरचनात्मक एवं गहन हैं, जिनके समाधान हेतु नीति–स्तरीय नवाचार और समावेशी दृष्टिकोण आवश्यक है।

शोध के उद्देश्य

- 2015 से 2025 के मध्य भारत द्वारा SDGs (विशेषतः गरीबी, स्वास्थ्य, शिक्षा, लैंगिक समानता एवं जलवायु परिवर्तन) के क्षेत्र में प्राप्त की गई प्रमुख उपलब्धियों का विश्लेषण करना।
- SDGs के क्रियान्वयन में आने वाली मुख्य चुनौतियों जैसे – आर्थिक असमानता, संसाधन कमी, क्षेत्रीय विषमता, जलवायु परिवर्तन तथा कोविड–19 महामारी का मूल्यांकन करना।
- 2030 तक SDGs की पूर्ण प्राप्ति हेतु भारत के लिए संभावित भावी रोडमैप, नीति सुझावों एवं रणनीतियों को प्रस्तुत करना।

शोध कार्यप्रणाली

इस शोध हेतु वर्णनात्मक (Descriptive) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) शोध–पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक (Secondary Data) स्रोतों पर आधारित है, जिसमें संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP), विश्व बैंक (World Bank), नीति आयोग की SDG India Index Reports (2018, 2020, 2023), राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO), आर्थिक सर्वेक्षण (Economic Survey of India), NFHS–5 (National Family Health Survey), एवं NITI Aayog द्वारा प्रकाशित वार्षिक प्रगति रिपोर्टों का उपयोग किया गया है। डेटा का चयन मुख्यतः SDG 1 (गरीबी), SDG 3 (स्वास्थ्य), SDG 4 (शिक्षा), SDG 5 (लैंगिक समानता), तथा SDG 13 (जलवायु परिवर्तन) जैसे प्रमुख लक्ष्यों से संबंधित संकेतकों पर किया गया। इन आँकड़ों का तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative Analysis) 2015 से 2025 के समयावधि के आधार पर किया गया है, जिसमें पूर्व–वर्तमान स्थिति को समझते हुए प्रगति, चुनौतियों एवं अंतर–राज्यीय असमानताओं का मूल्यांकन शामिल है।

शोध में प्रयुक्त डेटा का विश्लेषण तालिकाओं, प्रतिशतों तथा रुझान (Trend) आधारित व्याख्या के माध्यम से किया गया। इसके अतिरिक्त, विभिन्न शोध लेखों, रिपोर्टों और सरकारी दस्तावेजों की सामग्री विश्लेषण पद्धति (Content Analysis Method) द्वारा समीक्षा की गई, ताकि भारत की SDG प्रगति की वास्तविक स्थिति को समझा जा सके। अध्ययन का

उद्देश्य केवल आँकड़ों का वर्णन नहीं बल्कि उनसे प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर नीतिगत सुझाव तथा 2030 तक के लिए संभावित रोडमैप प्रस्तुत करना है।

भारत की उपलब्धियाँ (Achievements of India Towards SDGs, 2015–2025)

भारत ने 2015 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंगीकृत सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को राष्ट्रीय विकास नीति के साथ समन्वित करते हुए व्यापक सुधारों, योजनाओं और संस्थागत प्रयासों के माध्यम से उल्लेखनीय प्रगति की है। नीति आयोग द्वारा जारी SDG India Index 2023 के अनुसार, देश का समग्र SDG स्कोर 2018 में 57 से बढ़कर 2023 में 67 तक पहुँच गया, जो यह संकेत देता है कि भारत ने अनेक प्रमुख क्षेत्रों जैसे – गरीबी उन्मूलन, स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वच्छता, महिला सशक्तिकरण तथा नवीकरणीय ऊर्जा में सकारात्मक परिणाम प्राप्त किए हैं।

तालिका 1: भारत में SDG 1–6 की प्रगति (2015–2025)

SDG लक्ष्य	2015 की स्थिति	2023–25 की स्थिति	स्रोत
SDG 1 – गरीबी	21.2% आबादी गरीबी रेखा से नीचे	10.2% (World Bank, 2021)	World Bank (2021)
SDG 3 – स्वास्थ्य	MMR: 130, IMR: 40	MMR: 97, IMR: 28	NFHS–5 (2021)
SDG 4 – शिक्षा	साक्षरता दर – 73.2%	77.7%	UNESCO (2023)
SDG 5 – लैंगिक समानता	महिला श्रम भागीदारी – 23%	37%	CMIE (2024)
SDG 6 – जल एवं स्वच्छता	केवल 17% ग्रामीण घरों में नल से पानी	74% घरों तक जल आपूर्ति	जल शक्ति मंत्रालय (2024)

❖ SDG 1 – गरीबी उन्मूलन में प्रगति

भारत में 2005–06 से 2019–21 के बीच अत्यंत गरीबी में लगभग 415 मिलियन लोगों की कमी हुई (World Bank, 2022)। प्रधानमंत्री जन धन योजना (2014) के अंतर्गत 50 करोड़ से अधिक बैंक खाते खोले गए, जिससे वित्तीय समावेशन (Financial Inclusion) को मजबूती मिली। प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT), मनरेगा, प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना एवं सामाजिक सुरक्षा योजनाओं ने निम्नवर्गीय परिवारों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान की। गरीबी दर 2015 के 21.2% से घटकर 2021 में 10.2% के आसपास आई (World Bank, 2021), जो SDG 1 की दिशा में भारत की एक बड़ी उपलब्धि मानी गई।

❖ SDG 2 – भूखमरी व पोषण में सुधार

भारत ने खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (NFSA), PM-POSHAN (मिड डे मील) और ICDS (Anganwadi Program) के माध्यम से करोड़ों बच्चों एवं महिलाओं को पोषण उपलब्ध कराया। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (2020) के तहत 80 करोड़ लोगों को मुफ्त राशन दिया गया। हालांकि कुपोषण एक चुनौती बना हुआ है, फिर भी NFHS–5 के अनुसार स्टंटिंग दर 38.4% से घटकर 35.5% हुई है।

❖ SDG 3 – स्वास्थ्य एवं कल्याण में तेजी

आयुष्मान भारत (2018) विश्व की सबसे बड़ी स्वास्थ्य बीमा योजना है, जिसके अंतर्गत 28 करोड़ से अधिक लाभार्थी निःशुल्क इलाज प्राप्त कर चुके हैं (NHA, 2024)। भारत की मातृ मृत्यु दर (MMR) 2014–16 में 130 से घटकर 97 प्रति 1 लाख जीवित जन्म'', और शिशु मृत्यु दर (IMR) 40 से घटकर 28 प्रति 1000 (NFHS–5, 2021) हो गई।

कोविड–19 महामारी के दौरान भारत ने विश्व का सबसे बड़ा वैक्सीनेशन अभियान चलाकर 220 करोड़ vaccine doses प्रदान कीं। स्वच्छता, पोषण, स्वास्थ्य केंद्रों और चिकित्सा ढाँचे में सुधार ने SDG 3 को मजबूती प्रदान की।

❖ SDG 4 – गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की दिशा में प्रगति

भारत की साक्षरता दर 2015 में 73.2% से बढ़कर 2023 में 77.7% हो गई (UNESCO, 2023)। प्राथमिक विद्यालय नामांकन 97% से अधिक बना रहा।

नई शिक्षा नीति (NEP–2020) को SDG 4 के साथ समन्वित करते हुए शिक्षा को समावेशी, कौशल आधारित और डिजिटल रूप से सक्षम बनाने का प्रयास किया गया। SWAYAM, DIKSHA, PM e–Vidya, डिजिटल विश्वविद्यालय जैसे प्लेटफॉर्मों ने कोविड–19 के दौरान भी शिक्षा प्रणाली को रुकने नहीं दिया। बेटियों की शिक्षा हेतु सुकन्या समृद्धि योजना, किशोरी शिक्षा प्रोत्साहन योजना आदि का प्रभाव भी स्पष्ट दिखाई दिया।

❖ SDG 5 – लैंगिक समानता की ओर प्रगति

भारत में जन्म के समय लिंगानुपात 919 (2015) से बढ़कर 929 (2021) हुआ (NFHS–5)। महिला श्रम सहभागिता दर (Female Labour Force Participation Rate), जो 2017–18 में 23.3% थी, वह बढ़कर 2023 में 37% तक पहुँच गई (CMIE, 2024)।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, उज्ज्वला योजना, महिला हेल्पलाइन 181, वन स्टॉप सेंटर, POSH Act 2013 जैसी पहलों ने महिलाओं की सामाजिक–सांस्कृतिक स्थिति को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संसद और स्थानीय निकायों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी (पंचायती राज – 33% आरक्षण) भी एक उपलब्धि मानी जाती है।

❖ SDG 6 – स्वच्छ जल और स्वच्छता को सार्वभौमिक पहुँच

स्वच्छ भारत मिशन (2014) के माध्यम से ग्रामीण स्वच्छता कवरेज 38% से बढ़कर 100% हुई (MoHUA, 2021)। जल जीवन मिशन (2019) के अंतर्गत 2019 में केवल 17% ग्रामीण घरों में पाइप्ड पानी की सुविधा थी, जो 2024 तक 74% से अधिक हो चुकी है (Ministry of Jal Shakti, 2024)। इसके अतिरिक्त, गंगा नदी की सफाई हेतु नमामि गंगे मिशन एक सफल पर्यावरणीय एवं सांस्कृतिक पहल बनी।

❖ SDG 7 और 13 – ऊर्जा सुरक्षा एवं जलवायु कार्रवाई

भारत ने नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में असाधारण प्रगति की। 2015 में केवल 35 GW नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता थी, जो 2024 तक 174 GW तक पहुँच गई (MNRE, 2024)। भारत ने COP26 (Glasgow, 2021) में 2070 तक Net Zero Emission का लक्ष्य घोषित किया। International Solar Alliance (ISA) के माध्यम से भारत विश्व के 120 से अधिक देशों का नेतृत्व कर रहा है। PM-KUSUM, National Hydrogen Mission, Green India Mission जैसी योजनाएँ SDG 13 की ओर भारत के प्रयास का सशक्त उदाहरण हैं।

तालिका 2: SDG 7 एवं 13 ऊर्जा एवं जलवायु कार्रवाई

संकेतक	2015	2024	स्रोत
कुल नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता	35 GW	174 GW	MNRE (2024)
सौर ऊर्जा उत्पादन	5 GW	73 GW	MNRE (2024)
नेट जीरो लक्ष्य	घोषित नहीं	2070 निर्धारित	COP26, UNFCCC
इंटरनेशनल सोलर एलायंस	स्थापना वर्ष 2015	120 देश सदस्य	ISA (2024)

तालिका 3: भारत का समग्र SDG प्रदर्शन

संकेतक	2015	2024	स्रोत
गरीबी दर	21.2%	10.2%	World Bank
मातृ मृत्यु दर (MMR)	130	97	NFHS–5
महिला साक्षरता	65.5%	70.3%	UNESCO
ग्रामीण जल कवरेज	17%	74%	Jal Shakti Ministry
नवीकरणीय ऊर्जा	35 GW	174 GW	MNRE

सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की दिशा में भारत का प्रदर्शन 2015 से 2024 के बीच उल्लेखनीय सुधार दर्शाता है। गरीबी दर में 21.2% से घटकर 10.2% होना आर्थिक समावेशन और सामाजिक कल्याण योजनाओं की प्रभावशीलता को दर्शाता है। मातृ मृत्यु दर (MMR) का 130 से 97 तक आना स्वास्थ्य सेवाओं, संस्थागत प्रसव और पोषण योजनाओं में सुधार का प्रमाण है। महिला साक्षरता 65.5% से बढ़कर 70.3% हुई है, जो शिक्षा की पहुंच और बेटियों के प्रति बदलते सामाजिक दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करती है। ग्रामीण जल कवरेज में 17% से 74% तक की वृद्धि जल जीवन मिशन जैसी महत्वाकांक्षी योजनाओं की सफलता को दर्शाती है। वहीं, नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता 35 गीगावाट से बढ़कर 174 गीगावाट होने से स्पष्ट है कि भारत स्वच्छ ऊर्जा और जलवायु परिवर्तन नियंत्रण की दिशा में वैश्विक नेतृत्व की ओर अग्रसर है। हालाँकि, इन प्रगतियों के साथ क्षेत्रीय असमानताएँ, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य अवसंरचना, और रोजगार सृजन जैसे क्षेत्रों में अभी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। कुल मिलाकर, भारत का प्रदर्शन दर्शाता है कि देश SDG लक्ष्यों की ओर तेजी से बढ़ रहा है, परन्तु स्थिर और समावेशी विकास सुनिश्चित करने के लिए निरंतर प्रयास आवश्यक हैं।

भारत के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ (Challenges in Achieving SDGs in India, 2015–2025)

यद्यपि भारत ने SDGs की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है, फिर भी 2015–2025 की अवधि के दौरान अनेक संरचनात्मक, आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय चुनौतियों ने इसकी गति को बाधित किया। इन चुनौतियों को निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं में समझा जा सकता है:

- **आर्थिक असमानता और गरीबी का क्षेत्रीय स्वरूप**

गरीबी में कमी आई है, परन्तु यह समान रूप से वितरित नहीं हुई। बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में गरीबी दर अभी भी राष्ट्रीय औसत से अधिक है (NITI Aayog, 2023)। समृद्ध राज्यों (केरल, तमिलनाडु, पंजाब) और पिछड़े राज्यों के बीच आय विभाजन (Income Divide) लगातार बढ़ रहा है। ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के बीच विकास का अंतर भी गंभीर चिंता का विषय है।

तालिका 4: समग्र राष्ट्रीय स्कोर

वर्ष	SDG स्कोर	सर्वोच्च राज्य	न्यूनतम राज्य
2018	57	केरल	बिहार
2020	60	केरल	बिहार
2021	66	केरल	बिहार
2023	67	केरल	झारखंड

स्रोत: NITI Aayog

- **कुपोषण, खाद्य असुरक्षा और स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ**

NFHS–5 (2021) के अनुसार 35.5% बच्चे अभी भी स्टंटेड (कुपोषित) हैं। एनीमिया दर महिलाओं में 57% और बच्चों में 67% पाई गई, जो SDG 2 एवं 3 के लिए गंभीर चुनौती है। स्वास्थ्य बजट अभी भी GDP का मात्र 1.8% है (Economic Survey, 2024), जो WHO के मानक (6%) से कहीं कम है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य अवसंरचना, डॉक्टरों की कमी और मातृ–शिशु स्वास्थ्य सेवाओं में असमानताएँ अभी भी मौजूद हैं।

- **कोविड–19 महामारी का प्रभाव (Reversal of SDG Progress)**

कोविड–19 ने SDG प्रगति को गंभीर रूप से बाधित किया। गरीबी में पुनः वृद्धि, बेरोजगारी, स्कूल बंद होने से शिक्षा बाधित हुई, लाखों बच्चे ऑनलाइन शिक्षा से वंचित रहे। स्वास्थ्य तंत्र पर बोझ बढ़ा, और सरकारी संसाधन स्वास्थ्य व राहत कार्यों में पुनर्वितरित होने से अन्य SDGs की दिशा में निवेश धीमा पड़ा।

- **बेरोजगारी और असंगठित श्रम (SDG 8 की चुनौती)**

PLFS (2023) के अनुसार युवा बेरोजगारी दर 12–15% के बीच रही। 93% भारतीय श्रमिक असंगठित क्षेत्र में कार्यरत हैं जिनके पास सामाजिक सुरक्षा या स्थायी आय का अभाव है। महिला श्रम भागीदारी अभी भी पुरुषों की तुलना में बहुत कम है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में।

- **जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक आपदाएँ और पर्यावरणीय क्षरण**

भारत विश्व के सबसे अधिक जलवायु–संवेदनशील (Climate Vulnerable) देशों में शामिल है (UNEP, 2024)। बढ़ते तापमान, अनियमित मानसून, ग्लेशियर पिघलना, बाढ़ एवं सूखा असंख्य लोगों को प्रभावित कर रहे हैं।

उदाहरण – असम और बिहार में बार–बार बाढ़

विदर्भ, बुंदेलखंड में सूखा और जल संकट

दिल्ली, मुंबई में वायु प्रदूषण स्तर WHO मानकों से 7 गुना अधिक

- **डेटा, निगरानी एवं नीति के क्रियान्वयन की कमी**

यद्यपि नीति आयोग ने SDG India Index विकसित किया है, फिर भी ग्राम, ब्लॉक और जिला स्तर पर वास्तविक डेटा की कमी है। SDGs की स्थानीय स्तर पर मॉनिटरिंग, बजट आवंटन और प्रशासनिक समन्वय पर्याप्त नहीं है।

अनेक योजनाएँ कागजों में सक्रिय हैं, पर ग्राउंड इम्प्लीमेंटेशन (Field-Level Implementation) कमजोर होने के कारण प्रभाव कम दिखता है।

- **सामाजिक चुनौतियाँ – लैंगिक भेदभाव, जातीय असमानता एवं डिजिटल विभाजन**

एक ओर पुरुष–महिला लिंग अनुपात बेहतर हुआ है, पर बाल विवाह, घरेलू हिंसा, डिजिटल साक्षरता की कमी अभी भी बड़ी समस्याएँ हैं। डिजिटल इंडिया प्रोग्राम सफल रहा, लेकिन ग्रामीण भारत में 42% परिवारों के पास अभी भी इंटरनेट उपलब्ध नहीं है (NSO, 2023)।

भावी संभावनाएँ

- **स्थानीय स्तर पर SDGs का क्रियान्वयन (Localization of SDGs – Panchayat to Parliament)**

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में सतत विकास लक्ष्यों की सफलता केवल राष्ट्रीय स्तर की नीतियों पर निर्भर नहीं हो सकती। 2030 तक SDGs की पूर्णता सुनिश्चित करने के लिए इन्हें ग्राम पंचायत, शहरी निकाय, ब्लॉक और जिला स्तर पर स्थानीय योजनाओं में शामिल करना अनिवार्य है। "One District – One SDG Model" जैसे दृष्टिकोण में प्रत्येक जिले के प्रमुख विकास संकेतकों की पहचान कर उनकी प्राथमिकताओं के अनुसार कार्ययोजनाएँ बनाई जा सकती हैं। केरल, सिक्किम और भुवनेश्वर जैसे राज्यों व शहरों में SDG आधारित लोकल प्लानिंग के सफल उदाहरण मौजूद हैं। यदि भारत के 2.5 लाख से अधिक पंचायत स्तर तक SDG Planning, SDG Budgeting, डिजिटल निगरानी और जनभागीदारी लागू हो जाती है, तो क्ळे का विस्तार जन–आंदोलन में परिवर्तित हो सकता है। यह प्रक्रिया न सिर्फ विकास को विकेंद्रीकृत बनाएगी, बल्कि "सतत विकास" को जमीनी हकीकत से जोडने का कार्य करेगी।

- **हरित अर्थव्यवस्था और सर्कुलर इकोनॉमी की ओर परिवर्तन (Green Economy – Circular Economy)**

भारत को पारंपरिक जीवाश्म ईंधन आधारित अर्थव्यवस्था से हटकर हरित ऊर्जा, सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और हाइड्रोजन अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ने की आवश्यकता है। वर्तमान में भारत की नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता 174 GW तक पहुँच चुकी है, पर 2030 तक इसे 450 GW तक बढ़ाने का लक्ष्य रखा गया है। सर्कुलर इकोनॉमी मॉडल के तहत कचरे को संसाधन (waste-to-wealth) के रूप में प्रयोग करने, प्लास्टिक रीसाइक्लिंग, ई–वेस्ट मैनेजमेंट और हरित उद्योगों को बढ़ावा देना चाहिए। प्रधानमंत्री कुसुम योजना, राष्ट्रीय ग्रीन हाइड्रोजन मिशन और इलेक्ट्रिक व्हीकल पॉलिसी जैसे कार्यक्रम भारत को वैश्विक हरित विकास मॉडल बनाने की दिशा में अग्रसर कर सकते हैं। यदि ग्रामीण और शहरी दोनों स्तरों पर यह बदलाव तेजी से होता है, तो SDG 7 (सस्ती व स्वच्छ ऊर्जा) और SDG 13 (जलवायु कार्रवाई) में भारत नेतृत्वकारी भूमिका निभा सकता है।

- **सामाजिक समावेशन और न्यायसंगत विकास (Inclusive - Equitable Development)**

भारत के विकास की सबसे बड़ी चुनौती है कि विकास सभी तक समान रूप से पहुँचे। SDGs का मूल दर्शन "Leave No One Behind" तभी सफल हो सकता है जब दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक, महिलाएँ, विकलांगजन, प्रवासी श्रमिक और ग्रामीण गरीब विकास की मुख्यधारा में शामिल हों। इसके लिए सामाजिक सुरक्षा योजनाओं जैसे PM Jan Dhan

Yojana, Ujjwala Yojana, Ayushman Bharat, PM Awas Yojana, One Nation One Ration Card को और अधिक पारदर्शी, डेटा आधारित और प्रभावी बनाने की जरूरत है। डिजिटल गवर्नेंस, सामाजिक उद्यमिता (Social Entrepreneurship), महिला स्वयं सहायता समूह (SHGs) और Panchayati Raj संस्थाओं को मजबूत कर SDGs के लक्ष्यों को अधिक सामाजिक रूप से न्यायसंगत बनाया जा सकता है। इस प्रकार, विकास केवल आर्थिक वृद्धि न होकर समान अवसर और सामाजिक न्याय पर आधारित होना चाहिए।

- **शिक्षा, कौशल एवं रोजगार का एकीकरण (Education–Skill–Employment Linkage)**

2030 तक भारत विश्व की सबसे युवा आबादी वाला देश बना रहेगाय ऐसे में शिक्षा को सिर्फ डिग्री आधारित न रखकर कौशल, नवाचार और रोजगार–केंद्रित बनाना आवश्यक है। नई शिक्षा नीति (NEP–2020) इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। उच्च शिक्षा में कौशल आधारित पाठ्यक्रम, डिजिटल लर्निंग प्लेटफॉर्म (SWAYAM, DIKSHA), और व्यावसायिक शिक्षा को शामिल करने की आवश्यकता है। Skill India, PMKVY (प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना), ITI संस्थानों और Startup India मिशन को कृषि, नवीकरणीय ऊर्जा, ड्रोन टेक्नोलॉजी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डेडग्रे से जोड़ा जाए। इससे SDG 4 (Quality Education) और SDG 8 (Decent Work – Economic Growth) के लक्ष्य एकसाथ पूरे हो सकते हैं।

- **स्वास्थ्य एवं पोषण सुरक्षा (Health – Nutrition Security)**

SDG 3 (अच्छा स्वास्थ्य) और SDG 2 (Zero Hunger) के लिए भारत को अगले पाँच वर्षों में जनस्वास्थ्य ढाँचे को सुदृढ़ करना, पोषण की निगरानी करना और ग्राम स्तर तक स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचाना आवश्यक है। स्वास्थ्य बजट को GDP के 1.8% से बढ़ाकर कम से कम 2.5% करना जरूरी है (National Health Policy, 2017)। Ayushman Bharat योजना के तहत हेल्थ वेलनेस सेंटर्स (HWCs) को आधुनिक चिकित्सा सुविधाएँ, डिजिटल स्वास्थ्य आईडी और टेलीमेडिसिन से जोड़ा जाना चाहिए।

साथ ही, POSHAN Tracker, Mid-day Meal, PM-POSHAN Scheme, Anaemia Mukt Bharat अभियान के माध्यम से कुपोषण एवं एनीमिया को 2030 तक समाप्त करने का लक्ष्य रखा जा सकता है।

- **जलवायु–सहिष्णु विकास (Climate Resilient Development)**

जलवायु परिवर्तन भारत के लिए सबसे बड़ा पर्यावरणीय खतरा है। बाढ़, सूखा, पर्वतीय हिमनदी पिघलना और समुद्रस्तर वृद्धि जैसी घटनाएं SDG 13 के लिए चुनौती बन रही हैं। इसके समाधान हेतु भारत को कृषि, जल संसाधन, ऊर्जा और शहरी नियोजन को Climate Adaptive बनाना होगा। वर्षा जल संचयन, माइक्रो–इरिगेशन (ड्रिप, स्प्रिंकलर), मिलेट आधारित कृषि (Shree Anna Revolution), वनीकरण और कार्बन कैप्चर तकनीकों को बढ़ावा दिया जाए। भारत ने COP26 में 2070 तक नेट जीरो उत्सर्जन का वचन दिया है, जिसकी पूर्ति के लिए Green Hydrogen, Solar Parks, Wind Corridors और E-mobility जैसे क्षेत्रों में निवेश बढ़ाना अनिवार्य है।

- **डेटा पारदर्शिता एवं डिजिटल मॉनिटरिंग (Data Transparency - SDG Monitoring)**

SDGs की प्रगति को सटीक रूप से मापने के लिए भारत को रियल–टाइम SDG Data System विकसित करना होगा। नीति आयोग का SDG India Index एक महत्वपूर्ण पहल है, लेकिन अब District SDG Dashboard, Gram Panchayat SDG Reports, Mobile-based Monitoring Apps विकसित किए जाने चाहिए।

AI आधारित डेटा विश्लेषण, Remote Sensing, GIS Mapping और Digital Governance के माध्यम से यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि योजनाएँ केवल कागजों पर नहीं बल्कि जमीनी स्तर पर प्रभावी हों। इससे SDGs को "Policy Document" से हटाकर "Public Movement" में बदला जा सकता है।

निष्कर्ष

सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की 2015 से 2025 तक की यात्रा भारत के लिए आशा और चुनौती दोनों का संगम रही है। इस दशक में देश ने गरीबी में कमी, स्वच्छता कवरेज, स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार, शिक्षा तक पहुँच, महिला सशक्तिकरण तथा नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन जैसे क्षेत्रों में वैश्विक स्तर पर सराहनीय प्रगति दर्ज की है। स्वच्छ भारत मिशन, आयुष्मान भारत, जल जीवन मिशन, उज्ज्वला योजना, बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ और डिजिटल इंडिया जैसी पहलें

SDGs को स्थानीय स्तर तक ले जाने में महत्त्वपूर्ण ठोस कदम साबित हुईं। परंतु यह यात्रा चुनौतियों से मुक्त नहीं रही। आर्थिक असमानता, कुपोषण, बेरोजगारी, ग्रामीण–शहरी विभाजन, कोविड–19 का प्रभाव और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों ने विकास की गति को धीमा किया। आज भारत एक निर्णायक मोड़ पर खड़ा है, जहाँ केवल नीतियाँ बनाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनके प्रभावी क्रियान्वयन, स्थानीय भागीदारी, तकनीक–संचालित निगरानी तथा सामाजिक न्याय–आधारित विकास मॉडल की आवश्यकता है। यदि आने वाले पाँच वर्षों (2025–2030) में भारत लोकल SDG प्लानिंग, हरित अर्थव्यवस्था, महिला व युवाओं के सशक्तिकरण, शिक्षा–कौशल–रोजगार के एकीकरण और जलवायु–सहिष्णु नीतियों पर ध्यान केंद्रित करता है, तो वह न केवल 2030 तक SDGs की प्राप्ति के करीब पहुँच सकता है, बल्कि वैश्विक दक्षिण (Global South) के लिए एक आदर्श सतत विकास मॉडल भी प्रस्तुत कर सकता है। इस प्रकार, भारत की SDG यात्रा केवल एक नीति–पहल नहीं, बल्कि एक सामाजिक दायित्व, वैश्विक प्रतिबद्धता और भावी पीढ़ियों के प्रति उत्तरदायित्व की निरंतर प्रक्रिया है।

संदर्भ सूची

- CMIE (2024). Female Labour Force Participation Rate (FLFPR) Data Report.
- Economic Survey of India (2023–24). Ministry of Finance, Government of India.
- International Solar Alliance (ISA, 2024). Global Solar Energy Cooperation Framework.
- Kumar, P., & Ghosh, A. (2022). "SDGs in India: Progress, Challenges and Policy Implications." Journal of Sustainable Development Studies.
- Mehta, A., & Singh, N. (2020). "Poverty, Gender and SDG Implementation in India." Journal of Social Sciences.
- Ministry of Health and Family Welfare (2021). National Family Health Survey (NFHS-5), 2019–21.
- Ministry of Housing and Urban Affairs (2021). Swachh Bharat Mission (Urban & Rural) Progress Report.
- Ministry of Jal Shakti (2024). Jal Jeevan Mission Annual Report.
- Ministry of New and Renewable Energy – MNRE (2024). Renewable Energy Capacity Report.
- Ministry of Statistics and Programme Implementation – MoSPI (2024). SDG National Indicator Framework.
- National Health Authority (2024). Ayushman Bharat – PM-JAY Dashboard.
- NITI Aayog (2018–2023). SDG India Index & Dashboard Reports.
- NFHS-5 & POSHAN Abhiyan (2019–21). Ministry of Women and Child Development.
- Rao, S. (2023). Climate Change, Energy Transition and SDG 13 in India. Springer.
- Saxena, R. (2021). "Assessing State-wise Performance on SDGs in India." Economic & Political Weekly.
- UNDP (2024). Human Development Report.
- UNESCO (2023). Education and Literacy Profile – India.
- UNFCCC (2021). India's National Statement at COP26, Glasgow.
- United Nations (2015). Transforming Our World: The 2030 Agenda for Sustainable Development.
- United Nations ESCAP (2023). Asia-Pacific SDG Progress Report.
- World Bank (2021). Poverty and Shared Prosperity Report – India.
- World Commission on Environment and Development (1987). Our Common Future (Brundtland Report).
- WHO (2022). Global Health Expenditure Database.